न्यायालय श्रीमान सिविल जज (प्र०व०),आगरा

मूलवाद संख्या–   सन्–2025

1– अजय प्रताप सिंह, एडवोकेट, अध्यक्ष– योगेश्वर श्रीकृष्ण सांस्कृतिक अनुसंधान संस्थान ट्रस्ट, पता– 14, कृष्णा गार्डन, मघटई, आगरा–283105

2– आर्य संस्कृति संरक्षण ट्रस्ट, पता– 14, कृष्णा गार्डन, मघटई, आगरा–283105, द्वारा– अध्यक्ष– अजय प्रताप सिंह, एडवोकेट, पता– 14, कृष्णा गार्डन, मघटई, आगरा–283105।

3– योगेश्वर श्रीकृष्ण सांस्कृतिक अनुसंधान संस्थान ट्रस्ट, पता– 14, कृष्णा गार्डन, मघटई, आगरा–283105, द्वारा– अध्यक्ष– अजय प्रताप सिंह, एडवोकेट, पता– 14, कृष्णा गार्डन, मघटई, आगरा–283105।

न्यायालय श्रीमान सिविल जज(प्रवर वर्ग) आगरा
मूलवाद सं०–   सन्–2025
अजय प्रताप सिंह आदि
बनाम
अखिलेश यादव आदि

4– क्षत्रिय शक्तिपीठ विकास ट्रस्ट, पता– 14, कृष्णा गार्डन, मघटई, आगरा–283105, द्वारा– अध्यक्ष– अजय प्रताप सिंह, एडवोकेट, पता– 14, कृष्णा गार्डन, मघटई, आगरा–283105।

........................वादीगण

बनाम

1– अखिलेश यादव पुत्र मुलायम सिह यादव, राष्ट्रीय अध्यक्ष समाजवादी पार्टी, ग्राम– सैफई, थाना– सैफई, जनपद– इटावा, उत्तर प्रदेश।

2– रामजीलाल सुमन पुत्र गजाधर सिंह, राष्ट्रीय महासचिव समाजवादी पार्टी, निवासी– 1/1, एच०आई०जी० फ्लैट्स, संजय पैलेस, थाना– हरीपर्वत, आगरा–282002 ।

........................प्रतिवादी

<u>प्रार्थना पत्र अर्न्तगत आदेश 1 नियम 8 सी०पी०सी०</u>

महोदय!

वादीगण निम्नलिखित निवेदन करते है कि–

1. यह कि उपरोक्त वाद विपक्षीगण द्वारा ऐतिहासिक पुरूष व चरित्र राणा संग्राम सिंह जिन्हें राणा सांगा के नाम से जाना जाता है पर लगातार मुगल आंक्रांता बाबर को भारत पर आक्रमण करने का न्यौता देने का झूठा आरोप लगाया जा रहा है, जिसके सही ऐतिहासिक तथ्यों की उद्घोषणा हेतु उपरोक्त वाद श्रीमान जी के समक्ष दायर किया गया है वाद के मुख्य तथ्य अधोलिखित है।
2. यह कि वादी संख्या 1 अजय प्रताप सिंह, एडवोकेट, अध्यक्ष– योगेश्वर श्रीकृष्ण सांस्कृतिक अनुसंधान संस्थान ट्रस्ट है जो कि उक्त वाद के ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसंधानकर्ता है व वाद में आवश्यक पक्षकार है।
3. यह कि वादी संख्या 2 आर्य संस्कृति संरक्षण ट्रस्ट है जोकि भारतीय संस्कृति के संरक्षण के लिए कार्य करता है, राणा सांगा सभी भारतीयों के लिए एक आदर्श पुरूष है अतः आर्य संस्कृति संरक्षण ट्रस्ट उक्त वाद में एक आवश्यक पक्षकार है।

न्यायालय श्रीमान सिविल जज(प्रवर वर्ग) आगरा
मूलवाद सं०– सन्–2025
अजय प्रताप सिंह आदि
बनाम
अखिलेश यादव आदि

4. यह कि वादी संख्या 3 योगेश्वर श्रीकृष्ण सांस्कृतिक अनुसंधान संस्थान ट्रस्ट है जोकि भारत की मूल संस्कृति, सनातन धर्म और पर अनुसंधान कर रहा है जिसका एक उद्देश्य सनातन धर्म और भारतीय संस्कृति के सत्य तथ्यों व अन्य वाद में आवश्यक अन्य तथ्यों को माननीय न्यायालय के समक्ष लाना है अतः योगेश्वर श्रीकृष्ण सांस्कृतिक अनुसंधान संस्थान ट्रस्ट उक्त वाद में एक आवश्यक पक्षकार है।

5. यह कि वादी संख्या 4 क्षत्रिय शक्तिपीठ विकास ट्रस्ट है जोकि क्षत्रियों की कुल देवियों के मंदिरों की स्थापना व क्षत्रियों की संस्कृति व इतिहास संरक्षण के लिए कार्य कर रहा है। क्षत्रिय सनातन धर्म के एक अंग है और चारों युगों(सतयुग, त्रेता युग, द्वापर युग, कलयुग) में क्षत्रियों के अस्तित्व का प्रमाण मिलते है और आज भी क्षत्रियों की वंश परम्पराएं उन्हीं पूर्व युगों के अनुसार चलती है। राणा संग्राम सिंह उर्फ राणा सांगा सिसोदिया सूर्यवंशी क्षत्रिय कुल के है अतः क्षत्रिय शक्तिपीठ विकास ट्रस्ट उक्त वाद में एक आवश्यक पक्षकार है।

6. यह कि विपक्षी संख्या–1 रामजीलाल सुमन द्वारा लगातार यह झूठा दावा किया जा रहा है कि राणा सांगा ने बाबर को भारत पर आक्रमण करने के लिए आमंत्रित किया गया था और लगातार ऐतिहासिक तथ्यों को तोडमरोड कर पेश किया जा रहा है अतः

विपक्षी संख्या–1 रामजीलाल सुमन उक्त वाद में आवश्यक पक्षकार है।

7. यह कि वादी अजय प्रताप सिंह को विभिन्न सोशल मीडिया व मीडिया को माध्यमों से जानकारी मिली कि विपक्षी रामजीलाल सुमन द्वारा राणा सांगा के बारे में झूठा राणा सांगा ने बाबर को भारत पर आक्रमण करने के लिए आमंत्रित किया गया था जोकि उपलब्ध ऐतिहासिक अभिलेखों के अनुसार एक झूठा तथ्य है।

8. यह कि बाबरनामा जिसका अंग्रेजी में अनुवाद Annette Susannah Beveridge ने किया है जिसके प्रथम भाग में पेज संख्या–439–440–441 पर उल्लेख है बाबर को दौलत खान लोदी ने भारत में इब्राहीम लोदी के विरूद्ध आक्रमण करने के लिए बुलाया था जिसका विवरण निम्नप्रकार है–

929 AH.-NOV. 20TH 1522 to NOV. 10TH 1523 AD.

a. Affairs of Hindüstân

The centre of interest in Babur's affairs now noves from Qandahår to a Hindūstän torn by faction, of which faction one result was an appeal made at this time to Babur by Daulat Khăn Lūdi (Yūsuf-khail) and 'Alau'd-din 'Alam Khan Ludi for help against Ibrahim."

The following details are taken mostly from Ahmad Yädgår's Tarikh-i-salātin-i-afaghana:- Daulat Khanh en summoned to Ibrahim's presence; he had been afraid to go and had sent his son Dilawar in his place; his disobedience angering Ibrahim, Dilawar had a bad reception and was shewn a ghastly exhibit of disobedient commanders. Fearing a like fate for himself, he made escape and hastened to report matters to his father in Lahor. His information strengthening Daulat Khan's previous apprehensions, decided the latter to proffer allegiance to Babur and to ask his help against Ibrahim. Apparently 'Alam Khan's interests were a part of this request. Accordingly Dilawar (or Apāq) Khăn went to Kabul, charged with his father's message, and with intent to make known to Babur Ibrahim's evil disposition, his cruelty and tyranny, with their fruit of discontent amongst his Commanders and soldiery.

न्यायालय श्रीमान सिविल जज(प्रवर वर्ग) आगरा
मूलवाद सं०—   सन्—2025
अजय प्रताप सिंह आदि
बनाम
अखिलेश यादव आदि

b. Reception of Dilawar Khân in Kabul

may Wedding festivities were in progress when Dilawar Khăn reached Kabul. He presented himself, at the Char-bagh ma be inferred, and had word taken to Babur that

an Afghan was at his Gate with a petition. When admitted, he demeaned himself as a suppliant and proceeded to set forth the distress of Hindüstān. Bäbur asked why he, whose family had so long eaten the salt of the Lüdis, had so suddenly deserted them for himself. Dilawar answered that his family through 40 years had upheld the Lüdi throne, but that Ibrahim maltreated Sikandar's amirs, had killed 25 of them without cause, some by hanging, some burned alive, and that there was no hope of safety in him, Therefore, he said, he had been sent by many amirs to Babur whom they were ready to obey and for whose coming they were on the anxious watch.

c. Babur asks a sign

At the dawn of the day following the feast, Babur prayed in the garden for a sign of victory in Hindüstän, asking that it should be a gift to himself of mango or betel, fruits of that land. It so happened that Daulat Khan had sent him, as a present, half-ripened mangoes preserved in honey; when these were set before him, he accepted

न्यायालय श्रीमान सिविल जज(प्रवर वर्ग) आगरा
मूलवाद सं०—   सन्—2025
अजय प्रताप सिंह आदि
बनाम
अखिलेश यादव आदि

them as the sign, and from that time forth, says the chronicler, made preparation for a move on Hindüstän.

d. Alam Khan

Although 'Alam Khăn seems to have had some amount of support for his attempt against his nephew, events show he had none valid for his purpose. That he had not Daulat Khan's, later occurrences make clear. Moreover he seems not to have been a man to win adherence or to be accepted as a trustworthy and sensible leader. Dates are uncertain in the absence of Babur's narrative, but it may have been in this year that 'Alam Khan went in person to Kabul and there was promised help against Ibrahim.

9. यह कि उपरोक्त बाबरनामा में बाबर ने स्वंय लिखा है कि बाबर को इब्राहीम लोदी के विरूद्ध दौलत खान लोदी व अलाउद्दीन आलम खान लोदी ने प्रार्थनाा की थी और इब्राहीम लोदी ने अपने बेटे दिलावर खान लोदी व आलम खान को बाबर के पास काबुल भेजा था।

न्यायालय श्रीमान सिविल जज(प्रवर वर्ग) आगरा
मूलवाद सं०— सन्—2025
अजय प्रताप सिंह आदि
बनाम
अखिलेश यादव आदि

10. यह कि GAZETTEER OF THE LAHORE DISTRICT, 1883-4, Compiled and Published under the authority of the PUNJAB GOVERNMENT. के पेज संख्या – 20 पर भी यही

लिखा है कि बाबर को दौलत खान लोदी ने आमंत्रित किया था जिसका विवरण निम्नलिखित है–

The Lodi dynasty

From this period, the city was alternately in the hands of the Gakkhars and the ruling dynasty, until, in A. D. 1486, it was seired by Bahlol Khán Lodi, one of the Afghân chiefs, who rose to power on the overthrow of the Tughink dynasty, and eventually became Emperor. **In the reign of his grandson Sultan Ibrahim, Daulat Khán Lodi, the Afghán Governor of Lahore, revolted; and, Count Julian-like, invited to his aid the great Chagatai prince;** Bábar, who had long meditated an invasion of Hindustan, which he claimed as the representative of Timúr.

Lahore taken by Babur, A. D. 1524,

Bábar came, saw, and conquered. He was met by an Afghán army, composed of the supporters of Sultan Ibrahim, in the vicinity of Lahore; but it was speedily vanquished, and the victor enraged at the opposition he had experienced, let loose his soldiery upon the city, which they plundered and partially burnt. Babar did not remain long at Lahore, but, after a halt of only four days,

marched on towards Delhi. He did not, however, get further than Sarhind on this occasion. **Daulat Khân Lodi, who had invited him to Hindustan, being dissatisfied with his reward of a jégír, had already begun to intrigue against him.** He, therefore, returned to Lahore, and having parcelled out the provinces he had conquered among his nobles went back to Kabul. The next year, Lahore was the hotbed of intrigues fomented by Daulat Khán, which it is unnecessary to detail, but the following year Babar again appeared. An attempt was again made to oppose him at the Ravi, near Lahore; but the force melted away before it was attacked, and Bibar, without ontering Lahore, passed on towards Hindustan. This was his last expedition, and it ended, A. D. 1520, in the decisive victory of Panipat over the Afghán army, the capture of Delhi, and the foundation of the Mughal Empire.

न्यायालय श्रीमान सिविल जज(प्रवर वर्ग) आगरा
मूलवाद सं०— सन्–2025
अजय प्रताप सिंह आदि
बनाम
अखिलेश यादव आदि

11. यह कि बर्ष 1883–84 लाहौर गजेटियर के अनुसार भी बाबर को दौलत खान लोदी ने बुलाया था।

12. यह कि बाबरनामा जिसका अंग्रेजी में अनुवाद Annette Susannah Beveridge ने किया है जिसके द्वितीय भाग में पेज संख्या– 547

पर उल्लेख है बाबर ने राणा सांगा के विरूद्ध 11 फरवरी 1527 को आगरा छोड सीकरी की तरफ गया था जिसका विवरण निम्नप्रकार है–

(m. Babur leaves Agra against Rână Sanga.)

(Feb. 11th) On Monday the 9th of the first Jumāda, we got out of the suburbs of Agra, on our journey (safar) for the Holy War, and dismounted in the open country, where we remained three or four days to collect our army and be its rallying-point.* As little confidence was placed in Hindüstäni people, the Hindü. stän amirs were inscribed for expeditions to this or to that side: 'Alam Khan (Tahangari) was sent hastily to Güäliär to reinforce Rahim-dad; Makan, Qasim Beg Sanbali (Sambhalī), Hamid with his elder and younger brethren and Muhammad Zaitün were inscribed to go swiftly to Sanbal.

न्यायालय श्रीमान सिविल जज(प्रवर वर्ग) आगरा
मूलवाद सं०–   सन्–2025
अजय प्रताप सिंह आदि
बनाम
अखिलेश यादव आदि

13. यह कि बाबरनामा जिसका अंग्रेजी में अनुवाद Annette Susannah Beveridge ने किया है जिसके द्वितीय भाग में पेज संख्या– 548 पर उल्लेख है बाबर ने राणा सांगा के विरूद्ध 16 फरवरी 1527 को सीकरी की झील पर अपना कैम्प स्थापित किया था जिसका विवरण निम्नप्रकार है–

(Feb. 16th) Marching out of Agra on Saturday the 14th of the first Jumada, dismount was made where the wells had been dug. We marched on next day. **It crossed my mind that the well-watered ground for a large camp was at Sikri.** It being possible that the Pagan was encamped there and in possession of the water, we arrayed precisely, in right, left and centre. As Qismati and Darwish-i-muhammad Sarban in their comings and goings had seen and got to know all sides of Biana, **they were sent ahead to look for camping-ground on the bank of the Sikri-lake (kül).** When we reached the (Madhäkür) camp, persons were sent galloping off to tell Mahdi Khwaja and the Biana garrison to join me without delay. Humāyün's servant Beg Mirak Mughül was sent out with a fe braves to get news of the Pagan. They started that night, and next morning brought word that he was

heard of as having arrived and dismounted at a place one kurok (2 miles) on our side (aïlkārāk) of Basawar.3 On this same day Mahdi Khwaja and Muhammad Sl. Mirzā rejoined us with the troops that had ridden light to Biäna.

14. यह कि बाबरनामा जिसका अंग्रेजी में अनुवाद Annette Susannah Beveridge ने किया है जिसके द्वितीय भाग में पेज संख्या– 550 पर उल्लेख है बाबर ने सीकरी की झील के किनारे अपना कैम्प को मजबूत किया था जिसका विवरण निम्नप्रकार है–

(p. Babur fortifies his camp.)

For the sake of water, we dismounted with a large lake (kul) on one side of us. Our front was defended by carts chained together, the space between each two, across which the chains stretched, being 7 or 8 qari (circa yards). Mustafa Rūmi had had the carts made in the Rümi way, excellent carts, very strong and suitable. As Ustad 'Ali-quli was jealous of him, Mustafa was posted to the right, in front of Humayün. Where the carts did not reach to, Khurāsānī and Hindūstäni spadesmen and miners were made to dig a ditch.

न्यायालय श्रीमान सिविल जज(प्रवर वर्ग) आगरा
मूलवाद सं०–   सन्–2025
अजय प्रताप सिंह आदि
बनाम
अखिलेश यादव आदि

Owing to the Pagan's rapid advance, to the fighting-work in Biana and to the praise and laud of the pagans made

by Shah Manşür, Qismati and the rest from Blāna, people in the army shewed sign of want of heart. On the top of all this came the defeat of 'Abdu'l-'aziz. In order to hearten our men, and give a look of strength to the army, the camp was defended and shut in where there were no carts, by stretching ropes of raw hide on wooden tripods, set 7 or 8 qārī apart. Time had drawn out to 20 or 25 days before these appliances and materials were fully ready.

15. यह कि D.V. Sharma जोकि भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के आगरा सर्किल के अधीक्षण पुरातत्वविद् रहे है ने Archaeology of FATEHPUR SIKRI New Discoveries नाम की पुस्तक लिखी जिसमें उन्होनें राजकवि विद्याधर जी द्वारा रचित ख्यात का वर्णन किया है जिसका विवरण निम्नलिखित है–

”सम्वत् पन्द्रह सौ चौरासी, महिमा करत बखान।
युद्ध ठनो मुगलन सेना सों, कनवाँ को मैदान।।
सुनि संग्राम की बढती शक्ति, बाबर जब घबडायो।
साजि लियो मुगलन की सेना, दिल्ली से आगरा आयो।।
लोदी वंश नवाब समेटो, कुछ मुस्लिम सैन्य बनायो।
हाथी–घोडा साथ–साथ, तोपों का ज्ञान दिलवायों।।
पन्द्रह सौ मुगली सेना ले, सीकरी झील ढिग आयो।

प्रचुर स्वच्छ जल देखि वहाँ, सेना का शिविर बनायो।।

राजस्थान चित्तौड पर धावा, बोलन कियो तैयारी।

आस–पास के राजाओं से, कियो नाहि तकरारी।।

डालि सीकरी शिविर, और सेना बुलवायो।

साज्यो सैन्य समान, आगरा से मंगवायो।।

धावा करन चित्तौड पर, बाबर करत तैयारी।

संग्रामहुँ संदेश पढायो, धाम देव बलकारी।।

धामदेव संदेशा पाके, हिन्दू राज्य सम्भारी।

साजि बाजि रजपूती सेना, चल्यो तुरन्त ललकारी।।

गुप्त संदेशा राणा भेज्यो, धामदेव को जुहारी।

छाडि मेवाड आगे चढि आयो, बियाना मझवारी।।

धीरे–धीरे सिकर सेना, मिल्यो आई बियाना।

बाबर सेना भी चढि आयो, तब छिडयो युद्ध बहिठाना।।

रजपूती मेवाडी सेना, बाबर सेना पर टूट पडी।

ठन्यो युद्ध कनवाँ मैदानहि, मुगलन सेना हुई भाग खडी।।

बहुत बडी रजपूती सेना, बाबर सेना मुख मोड दियो।।

कनवाँ को मैदान बीच, काटि मुगल सिर तोड दियो।।

कार्तिक माह की पंचमी, सम्वत् पन्द्रह सौ चौरासी।

मुगलन पर धावा कियो, चौरासी के बासी।।

चौरासी के बासी, बाँधि केसरिया बाना।

कूदि पडयो मैदान ठावँ तहूँ रहयो बियाना।।

न्यायालय श्रीमान सिविल जज(प्रवर वर्ग) आगरा
मूलवाद सं०–   सन्–2025
अजय प्रताप सिंह आदि
बनाम
अखिलेश यादव आदि

कनवाँ के मैदान में, युद्ध ठनो तब भारी।
बाबर सेना कटि मरी, रजपूत लडो ललकारी।।
दूजी सेना बाबर की आई, मरो ताहि बहुतेरे।
सैनय दुर्दशा देखि निज, बाबर लौटो डेरे।
धामदेव के धाम में, अन्न जल भरयो अगाथ।।

16. यह कि बाबरनामा और सिकरवारों की ख्यात दोनों में इस तथ्य का उल्लेख है कि बाबर ने सीकरी की झील पर अपना सैन्य कैम्प स्थापित किया था।

17. यह कि बाबरनामा के द्वितीय भाग में पेज संख्या–551–552 में सीकरी में बाबर द्वारा शराब छोडे जाने व कथित बुंलद दरवाजा के दक्षिणी द्वार के दक्षिण–पश्चिम में कुआँ व इसके पीछे दक्षिण–पूर्व एक गरीबघर (Almshouse) के निर्माण का उल्लेख है और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के अधीन संरक्षित स्मारक है। बाबरनामा का उपरोक्त विवरण निम्नलिखित है–

न्यायालय श्रीमान सिविल जज(प्रवर वर्ग) आगरा
मूलवाद सं०– सन्–2025
अजय प्रताप सिंह आदि
बनाम
अखिलेश यादव आदि

" *(r. Babur renounces wine)*

On Monday the 23rd of the first Jumada (Feb. 25th), when I went out riding, I reflected, as I rode, that the wish to cease from sin had been always in my mind, and that my forbidden acts had set lasting stain upon my heart. Said I, "Oh! my soul!"

(Persian) "How long wilt thou draw savour from sin? Repentance is not without savour, taste it!"

(Turki) Through years how many has sin defiled thee?
How much of peace has transgression given thee?
How much hast thou been thy passions slave?
How much of thy life flung away?
Witth the Ghazi's resolve since now thou hast marched,
Thou hast looked thine own death in the face!
Who resolves to hold stubbornly fast to the death,
Thou knowest what change he attains,
Thaty far he removes him from all things forbidden,
That from all his offences he cleanses himself.
With my own gain before me, I vowed to obey,
In this my transgression the drinking of wine.
The flagons and cups of silver and gold, the vessels of feasting,
I has them all brought;
I had them all broken up then and there.
Thus cased I my heart by renouncement of wine.

The fragment of the gold and silver vessels were shared out to deserving persons and to darwishes. The first to agree in renouncing wine was 'Asas; he had already agreed also about leaving his beard untrimmed. That night and next day some 300 begs and persons of the

न्यायालय श्रीमान सिविल जज(प्रवर वर्ग) आगरा
मूलवाद सं०– सन्–2025
अजय प्रताप सिंह आदि
बनाम
अखिलेश यादव आदि

household, soldiers and not soldiers, renounced wine. **What wine we had with us was poured upon the ground, <u>a well was ordered to be dug, built up with stone and having an almshouse beside it.</u> It was already finished in Muharram 935 (A.H.- Sep. 1528 A.D.) at the time I went to Sikri from Dulpur on my way back from visiting Gualiar.**

18. यह कि उपरोक्त अष्टभुजीय जलाशय (कुआँ) से एक शिलालेख प्राप्त हुआ है जिसका वर्णन ARCHAEOLOGICAL SURVEY OF INDIA , EPIGRAPHIA INDICA, ARABIC AND PERSIAN SUPPLEMENT(In continuation of the series Epigraphia Indo-Moslemica) 1965 में निम्नप्रकार किया गया है–

<u>INSCRIPTION, DATED A.H. 933, FROM FATEHPUR SIKRI</u>

The earliest inscription of Babur is from Fatehpur Sikri, the deserted capital of Akbar, situated at a distance of about forty kilometer from Agra by rail as well as by road. Sikri was a small village then. Close by at Khanwa, the famous decisive battle was fought between Babur and Rana Sanga in 1527 A.D., when the former changed its name to Shukri (Thanksgiving) as a

token of his gratefulness to God for the hard won victory. On its selection as the imperial head quarters by Akbar, a large number of magnificient buildings both public and private, and beautiful baths were constructed, and delighful gardens laid out. But its glory was short lived, and just before the turn of the sixteenth century, the capital was abandoned on account of its inferior water, unhealty climate and certain political reasons.

It is a pity that in so historical a place as Fatehpur Sikri, where Babur staked his all on the bloody battle against Rana Sangh, no monument of his time can with propriety be identified. Babur is stated to have been writing his Tuzuk in a building erected there by him, but of it unfortunately nothing is now traceable. In an out of the way place near the Ajmeri Gate, however a well can be seen cantainging a much worn out inscription of his regain. From the Babur Nama it is learnt that wen Babur had renounced wine, his liguor-flagons, goblets, etc., were broken at a place in Sikri, where he ordered a well to be dug, ‘built up with stone and having an almshouse beside it. The above well,

न्यायालय श्रीमान सिविल जज(प्रवर वर्ग) आगरा
मूलवाद सं०– सन्–2025
अजय प्रताप सिंह आदि
बनाम
अखिलेश यादव आदि

also known after Babur's name, and the remains near by of armed sandstone building, which may be supposed to be Babur's almshouse, lead one to think that it is the same well as was constructed to commemorate his absolute remission. The debris of the house was noticed by the writer of this article in 1928 but that too is now no more traceable. The inscriptional tablet measuring 86 cm. by 1.15m. is built upito the steening of the well and contains a record of three lines executed in Thulth script showing a tendency towards Tughra. The calligraphy of this otherwise beautiful inscription, now almost worn out and damaged, is of a pretty high over. The text is in Persian prose, purporting that the construction of the well took place in A.H. 933 (1526-27 A.D.) by the orders of Zahiru'd-Din Muhammad Babur, at the time of his return from his battle with Rana Sanga. The English translation of the inscription as follows-

न्यायालय श्रीमान सिविल जज(प्रवर वर्ग) आगरा
मूलवाद सं०— सन्—2025
अजय प्रताप सिंह आदि
बनाम
अखिलेश यादव आदि

(1) At the orders of Zahiru'd-Din Muhammad Babur Badshah Gazi, may Allah perpetuate his kingdom and sovereignty.

(2) **The completion of this well was achieved through the Divine guidance in the year nine hundred and thirty and three from the Migration. (A.H. 933 = 1526-27 A.D.)**

At the time of the victorious return from the battle against the infidel Rana Sanga.

19. यह कि बाबर का उक्त शिलालेख जिस बाओली से मिला है उसका नाम इन्द्रावती बाओली है।

20. यह कि जब बाबर लगातार युद्ध के बाद भी राणा सांगा से नही जीत पाया तो उसने सीकरी झील से अपना कैम्प छोडकर खानवा में पहाडी के निकट अपना कैम्प स्थापित किया।

21. यह कि बाबरनामा के द्वितीय भाग में पेज संख्या–559 व 563 पर बाबर ने लिखा है कि 17 मार्च 1527 को बाबर ने खानवा के निकट पहाडी के पास अपना सैन्य कैम्प स्थापित किय जिसका विवरण निम्नलिखित है–

(Page-559) A few tents had been set up; a few were in setting up when news of the appearance of the enemy was brought. Mounting instantly, I ordered every man to his post and that our array should be protected with the carts.

(Page- 563)

न्यायालय श्रीमान सिविल जज(प्रवर वर्ग) आगरा
मूलवाद सं०– सन्–2025
अजय प्रताप सिंह आदि
बनाम
अखिलेश यादव आदि

(c. Military movements.)

(March 17th, 1527) On Saturday the 13th day of the second Jumada of the date 933, a day blessed by the words, God hath blessed your Saturday, **the army of Islam was encamped near the village of Känwa, a dependency of Biana, hard by a hill which was 2 kuroks (4 m.) from the enemies of the Faith.** When those accursed infidel foes of Muhammad's religion heard the reverberation of the armies of Islam, they arrayed their ill-starred forces and moved forward with one heart, relying on their mountain-like, demon-shaped elephants, as had relied the Lords of the Elephant 3 who went to overthrow the sanctuary (ka'ba) of Islam.

22. यह कि बाबरनामा में पेज संख्या– 562 पर बाबर ने लिखा है कि राणा सांगा की सेना में सलाहुद्दीन के 30000 घोडे, बागर के रावल उदय सिंह 12 हजार घोडे, मेदनी राय के 12 हजार घोडे, हसन खां मेवाती के 12 हजार घोडे, कच्छ के सत्रवी के 6 हजार घोडे, ईडर के भारमल के 4 हजार घोडे, नरपत हाडा के 7 हजार घोडे, धर्मदेव के 4 हजार घोडे, वीरसिंह देव के 4 हजार घोडे, महमूद खान के 10 हजार घोडे सहित दो लाख 1 हजार की सेना थी।

23. यह कि बाबरनामा के पेज संख्या– 573–574 पर बाबर ने इस युद्ध में हिन्दू सेनापतियों के मारे जाने का उल्लेख किया है जिसका विवरण निम्नलिखित है–

(j. Hindů chiefs killed in the battle.)

Hasan Khan of Miwat was enrolled in the list of the dead by the force of a matchlock (zarb-i-tufak); most of those headstrong chiefs of tribes were slain likewise, and ended their days by arrow and matchlock (tir u tufak). Of their number was Rawal Üdi Singh of Băägar, ruler (wali) of the Dungarpür country, who had 12,000 horse, Rãi Chandrabân Chủhân who had 4,000 horse, Bhüpat Rão son of that Şalahu'd-din already mentioned, who wa. lord of Chandīrī and had 6,000 horse, Mänik-chand Chükän and Dilpat Rão who had each 4,000 horse, Kankü (or Gangū) and Karm Singh and Danküsi (?) who had each 3,000 horse, and a number of others, each one of whom was leader of a great command, a splendid and magnificent chieftain. All these trod the road to Hell, removing from this house of clay to the pit of perdition. The enemy's country (daru'l-harb) was full, as Hell is full,

of wounded who had died on the road. The lowest pit was gorged with miscreants who had surrendered their souls to the lord of Hell. In whatever direction one from the army of Islam hastened, he found everywhere a self-willed one dead; whatever march the illustrious camp made in the wake of the fugitives, it found no foot-space without its prostrate foe.

All the Hindüs slain, abject (khwör, var, sår) and mean, By matchlock-stones, like the Elephants' lords, Many hills of their bodies were seen, And from each hill a fount of running blood. Dreading the arrows of (our) splendid ranks, Passed they in flight to each waste and hill. They turn their backs. The command of God is to be performed. Now praise be to God, All-hearing and All-wise, for victory is from God alone, the Mighty, the Wise. Written Jumada II. 25th 933 (AH.-March 29th 1527 A.D.).

24. यह कि बाबर का सैन्य कैम्प सीकरी किले पर लडा गया था और खानवा में बाबर का सैन्य कैम्प था, सीकरी के कामाख्या माता मंदिर परिसर में आज भी लगभग 300 मजारें स्थित है जोकि 17 मार्च 1527 में बाबर–राणा सांगा की सेना के बीच हुए युद्ध में मारे गये

मुगल सैनिकों की है। उस समय सीकरी के राजा राजा धामदेव सिकरवार थे जोकि सिकरवारों की ख्यात से स्पष्ट होता है।

25. यह कि प्रतिवादी संख्या–2 को फोन पर सही तथ्यों की जानकारी दी गयी किन्तु प्रतिवादी ने फोन काट दिया लोगों से कहा व कहलवाया गया कि वह राणा सांगा पर बाबर को बुलाने का झूठा ऐतिहासिक दावा न करें किन्तु प्रतिवादीगणों ने सही तथ्य कहने से साफ मना कर दिया और दिनाँक– 23–03–2025 को उसने कह दिया वह भारतीय जनता के सामने यह झूठ फैलायेगा कि बाबर को राणा सांगा ने भारत पर आक्रमण करने के लिए आमंत्रित किया न कि दौलत खान लोदी ने। जिस कारण माननीय न्यायालय में वादीगण को उक्त वाद दायर करने के लिए विवश होना पडा।

न्यायालय श्रीमान सिविल जज(प्रवर वर्ग) आगरा
मूलवाद सं०– सन्–2025
अजय प्रताप सिंह आदि
बनाम
अखिलेश यादव आदि

26. यह कि वाद बाबत् सुनने व निस्तारण हेतु विवादित संपत्ति की कीमत मु० 600000 रू० निर्धारित की जाती है, व वास्ते घोषणात्मक आज्ञप्ति प्रार्थना 27(अ) पर न्याय शुल्क मु० 200 रू० व वास्ते घोषणात्मक आज्ञप्ति प्रार्थना 27(ब) पर न्याय शुल्क मु० 200 रू० विधिवत अदा किया जाता है।

प्रार्थना

27. यह कि वादीगण अन्तिमतः निम्न प्रार्थना करते है–

(अ)– यह कि घोषणात्मक आज्ञप्ति वहक वादीगण विरूद्ध प्रतिवादीगण इस आशय की जारी की जावे कि बाबर को इब्राहीम

लोदी के विरूद्ध भारत पर आक्रमण करने के लिए दौलत खान लोदी ने आमंत्रित किया था न कि राणा सांगा ने।

(ब)– यह कि घोषणात्मक आज्ञप्ति वहक वादीगण विरूद्ध प्रतिवादीगण इस आशय की जारी की जावे कि 17 मार्च 1527 ई० को सीकरी किले पर अंतिम निर्णायक युद्ध हुआ था न कि खानवा में।

(स)– यह कि संबधित ऐतिहासिक अभिलेखों अथवा राज्य के इससे संबधित अभिलेखों में माननीय न्यायालय के आदेश का विधिवत प्रक्रिया के अनपालन के तहत क्रियान्वन किया जावे।

न्यायालय श्रीमान सिविल जज(प्रवर वर्ग) आगरा
मूलवाद सं०– सन्–2025
अजय प्रताप सिंह आदि
बनाम
अखिलेश यादव आदि

तस्दीकः–

मैं अजय प्रताप सिंह उपरोक्त वाद–पत्र की जिमन 1 लगायत 27 को अपने निजी ज्ञान व मशिवरा कानूनी एवं उपलब्ध ऐतिहासिक संदर्भो के आधार पर सत्यापित करता हूँ कि सत्य है।
सत्यापन आज दिनाँक– 24–03–2025 को वमुकाम दीवानी आगरा किया गया।

वादीगण

अजय प्रताप सिंह आदि